**International Journal of Educational Research and Development**
www.allinnovationjournal.com
Online ISSN: 2664-7095, Print ISSN: 2664-7087
Received: 16-01-2021, Accepted: 04-02-2021, Published: 24-03-2021
Volume 3, Issue 1, 2021, Page No. 30-31

# भारतीय ज्ञान परंपरा के संरक्षण एवं संवर्धन में 'संगीत' का योगदान

**डा. शम्पा चौधरी**
असोसिएट, प्रोफेसर संगीत विभाग, वी. एम. एल. जी. कॉलेज, गाजियाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

**शोध प्रपत्र सारांश**
मनुष्य स्वभाव से ही आध्यात्म की ओर प्रेरित एवं उन्मुख है। प्रत्येक शरीर में परमात्मा अर्थात् परब्रह्म का अंश विद्यमान है। यही कारण है कि जब मनुष्य को सर्वोच्च ज्ञान या आत्मा का ज्ञान होता है तो वह सांसारिक राग–द्वेष से मुक्त होकर एवं ऊपर उठकर अन्तर्मन में सत्य के करीब आता है तथा उसे दिव्य आनन्द की अनुभूति होती है। अध्यात्म में ही ज्ञान, कर्म और उपासना का विशेष स्थान है। इसलिए आध्यात्मिकता का मूल आधार एकाग्रता को माना गया है। एकाग्रता के होते ही आत्मा में अतीन्द्रिय सुख का संचार होने लगता है। संगीत, संगीत के स्वरों एवं संगीत के अभ्यास में एक अद्भुत शक्ति है। संगीत के स्वर मन को एकाग्र करके इतना अधिक तल्लीन, तन्मय और स्थिर कर देते हैं कि स्वर साधना करने से ही संगीतकार की एकाग्रता बन जाती है तथा संगीतकार के लिए आध्यात्मिकता का मार्ग प्रशस्त हो जाता है।
आध्यात्मिक दृष्टिकोण से संगीत सर्वोच्च कला है। भारतीय संगीत की आधारभूमि भौतिक विलास नहीं बल्कि धार्मिक अनुभूति रही है। संगीत का ध्येय धर्म प्रचार नहीं रहा है वरन इसके माध्यम से मनुष्य उस परब्रह्म की परमसत्ता में अंतर्लीन होकर परमानंद की अनुभूति करने में सक्षम होता है। योगशिखोपनिषद् के अनुसार संगीत को श्रेष्ठतम पूजा माना गया है एवं गान को ईश्वर स्तुति का सर्वोत्तम साधन। ग्रीक विद्वान पायथागोरस के अनुसार विश्व के अणु–रेणु में संगीत परिव्याप्त है। महान दार्शनिक प्लेटो के अनुसार समस्त विज्ञानों का मूलाधार संगीत है। विथोवेन ने कहा है कि "Music is the mediator between the spiritual and the sensual Life"
प्रस्तुत शोध पत्र में भारत के विभिन्न ज्ञान परंपराओं में निहित संगीत एवं उसमें व्याप्त आध्यात्मिकता द्वारा मानव मानसिक संकीर्णता को दूर कर ज्ञान के मार्ग पर अग्रसर होता है, इसपर प्रकाश डाला गया है।

**मुख्य शब्द :** ज्ञान, दर्शन, आध्यात्म, नाद, परंपरा, वेद

## शोध प्रपत्र

भारतीय संगीत की आधारशिला आध्यात्मिकता है। भारत धर्म प्रधान देश है। भारतीय विचारधारा सदा से आदर्श की भावभूमि पर प्रवाहित होती रही है। जिसका प्रमुख उद्देश्य लोक कल्याण है। यहाँ की धरती में राम, कृष्ण, बुद्ध, रामकृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द, महावीर की आत्मा कण–कण में समाहित है। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, अस्तेय और अपरिग्रह इन पंच महाव्रतों को इस देश के निवासी युगों–युगों से आत्मसात करते आ रहे हैं। भारतीय संगीत सदा से धर्म प्रधान रहा है। यहाँ की समस्त कलाएँ दर्शन–चिंतन आदि इसी ओर उन्मुख रही। यही कारण है कि धर्म एवं संगीत का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है। धार्मिक दृ ष्टिकोण के अनुसार संगीत की उत्पत्ति वेदों के निर्माता ब्रह्मा द्वारा की गई। ब्रम्हा ने शिव, शिव ने सरस्वती, सरस्वती से नारद को और नारद से यह कला स्वर्ग के गन्धर्व व अप्सराओं को प्राप्त हुई। इस तरह से संगीत के विकास का क्रम आगे बढ़ा। 'नाद' को उपासना का माध्यम माना गया है। ब्रह्माण्ड की प्रत्येक चराचर वस्तु में नाद व्याप्त है, नाद ब्रह्म से ही संगीत की उत्पत्ति हुई है। नदी का कल–कल करता जल, सुबह–शाम चिड़ियों की चहचहाहट, झरने की झर–झर, हवा की साय–साय, रात के सन्नाटे में झींगुरों की झिन–झिन और आँधी मे हवा की हरर–हरर की आवाजें मनुष्य आदि काल से सुनता आया है। विभिन्न पशु–पक्षियों की आवाजें भी वह सुनता आया है। इन्ही सब ध्वनियों में उसने अंतर करना भी सीखा। किसी वृक्ष की सूखी टहनी से जब उसने पत्थरों पर वार किया होगा तब उसने एक अलग ही ध्वनि सुनी होगी । सूखी फलियों को हिलाया होगा तो उसके अंदर से बीज बज उठे होंगे । पत्ती को मोड़कर उसमें फूक–मारी होगी तो उसे सीटी जैसी ध्वनि सुनाई दी होगी । मनुष्य के मन में यह बात तो जरूर आई होगी कि इन सब को बजाया जा सकता है । यही से वाद्यों का एक रूप उसके मन में बैठ गया होगा। आज भी न्यू गिनी के आदिवासी सूखी हुई फलियों के गुच्छे डोरी मे बाँधकर, अपनी कमर से लपेट लेते हैं और जब वे नाचते हैं तो इन फलियों के बीज बजते हैं जिससे नृत्य में किसी और वाद्य की जरूरत ही नही पड़ती है। उस युग को हम प्राक् संगीत युग कह सकते हैं जिसमें मनुष्य ने प्रकृति की ध्वनियों और उनकी विशिष्ट लय को जानने और समझने की कोशिश की। माना जाता है कि संगीत का आदिम् स्रोत प्राकृतिक ध्वनियाँ ही हैं, लेकिन ये ध्वनियाँ संगीत का आधार नहीं हैं। प्रश्न यह है कि आखिर ऐसी कौन सी ध्वनियाँ हैं जो संगीत पैदा कर सकती हैं ? संगीत केवल उन्ही ध्वनियों से निकलता है जो हमारे मन में किसी न किसी भाव से उपजती है।

## सांगीतिक ध्वनि

ध्वनियों कई प्रकार की होती हैं। उन ध्वनियों को जिनमें लय होती है हम संगीत के लिए उपयोगी मान सकते हैं, बाकी ध्वनियों का संगीत से कोई लेनादेना नही होता। कोयल की कूहू–कूहू, बरसात की रिमझिम, नदियों की कलकल आदि को संगीत के योग्य ध्वनियों कहा जा सकता है क्योंकि वे एक निश्चित लय में उत्पन्न होती हैं । लेकिन ये ध्वनियाँ संगीत नहीं है। ये किसी प्रकार की भावना या अभिव्यक्ति से पैदा नहीं होती है, भले ही सुनने वाले के मन में कोई भाव पैदा करती हो। ये केवल मधुर लगती है। लेकिन यह भी सच है कि ये प्राकृतिक ध्वनियों मनुष्य के लिए प्रेरणा का स्रोत तो जरूर रही हैं । मनुष्य ने जब प्रकृति की ध्वनियों में छिपे संगीत के गुण को पहचाना होगा तो उन्हें लय में बांधने का प्रयास भी किया होगा। अतः यह कहा जा सकता है कि संगीत भावव्यंजक यानी भाव प्रकट करने वाली ध्वनियों से पैदा हुआ। भावव्यंजक ध्वनियों ही संगीत का आधार हैं ।

## भारतीय दर्शन एवं संगीत

भारतीय दर्शन में संगीत के जन्म को लेकर कई रोचक कथाए प्रचलित हैं । कहा जाता है कि चारों वेदों की रचना करने वाले ब्रह्मा ने ही संगीत को भी जन्म दिया । इस युग को वैदिक युग कहा गया है क्योंकि इस युग में चारों वेदों की रचना हुई। ये चार वेद हैं–ऋग्वेद, सामवेद, अथर्ववेद और यजुर्वेद । संगीत के विषय में ब्रहमा ने विस्तार से सामवेद में बताया है। कहा जाता है कि उन्होंने यह विद्या शिव को सिखाई और शिव ने देवी सरस्वती को संगीत के संस्कार दिए। संगीत में पारंगत होने के बाद ही सरस्वती 'वीणापाणि' कहलाईं । इसीलिए सरस्वती के चित्रों में उन्हें हाथों में वीणा उठाये दिखाया जाता है। स्वर्गलोक में निवास करने वाले नारद मुनि भूलोक यानी पृथ्वी पर आया–जाया करते थे। यही नारद सरस्वती के शिष्य बने और जब संगीत की विद्या ग्रहण कर चुके तो उन्होंने यह विद्या गंधर्वों, किन्नरों और अप्सराओं को सौंपी । भूलोक पर रहने वाले भरत मुनि और अन्य तपस्वियों ने गंधर्वों और किन्नरों से संगीत का ज्ञान प्राप्त किया और पृथ्वी पर अन्य लोगों को सिखाया । ऐसी ही एक अन्य कथा के अनुसार संगीत की रचना करने वाले ब्रह्मा नहीं बल्कि शिव थे । नारद मुनि ने शिव से संगीत सीखने के लिए कई वर्षों तक कठोर तपस्या की। शिव उनसे प्रसन्न हुए और इस शर्त पर उन्हें संगीत सिखाया कि वे इस ज्ञान को भूलोक पर फैलायेंगे । नारद मुनि स्वर्गलोक से पृथ्वी पर आये और उन्होंने तपस्वियों को संगीत का प्रशिक्षण दिया ।

प्रचलित कथाओं में देवराज इंद्र की संगीत–नृत्य सभा का भी उल्लेख मिलता है । इंद्र की सभा में गायक, नर्तक और वादक सभी हुआ करते थे। गंधर्व गाते थे, अप्सराएँ नृत्य करती थी और किन्नर वाद्य बजाते थे। भारतीय संगीत की धारणा में गायन, वादन और नृत्य विभिन्न कलाएँ अवश्य हैं किन्तु इन तीनों का मेल ही वस्तुतः संगीत कहलाता है। संगीत रत्नाकर नाम के ग्रंथ में संगीत के विषय में यही कहा गया है।

**"गीतं वाद्यं तथा नृत्यं त्रयं संगीतमुच्यते।।"**

## भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत :

भारतीय संगीत की उत्पत्ति अत्यंत प्राचीन है। भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत को धर्म, दर्शन एवं आध्यात्मिक उन्नति का मार्ग माना गया है। यह कला ब्रह्मा, शिव, सरस्वती, नारद आदि अनेक देवी–देवताओं से संबंध रखती है। इंद्र के दरबार में अनेकों नृतिकाओं का वर्णन हमें मिलता है। यहाँ तक की भारत की पुरातन हड़प्पा संस्कृति एवं सभ्यता में मिली प्राचीन सांकेतिक मूर्तियाँ यह बतलाती है कि भारतीय जनमानस का संबंध संगीत कला से अत्यंत पुराना है। अनेक योगी, ऋषियों ने नाद के अनाहत एवं आहत स्वरूप का चिंतन करके ईश्वर प्राप्ति की है। तो दूसरी ओर भारतीय संगीत की समृद्ध शास्त्रीय ज्ञान परंपरा शामिल है जिसमें सर्वप्रथम वेद, संहिताएँ, आरण्यक, ब्राह्मण ग्रंथ, उपनिषदसूत्र, पुराण आदि शामिल हैं। सामवेद के पश्चात संगीत का ज्ञान का महाग्रंथ नाट्यशास्त्र है। जिसे पंचम वेद भी कहा जाता है। नाट्यशास्त्र के पश्चात संगीत पारिजात, संगीत रत्नाकर, संगीत दर्पण, संगीत मकरंद, संगीत समयसार एवं आधुनिक ग्रंथकारों के विभिन्न ग्रंथ प्राप्त होते हैं। शास्त्र एवं प्रयोग की इन दो महान परंपराओं के परस्पर संरक्षण संवर्धन एवं विकास के फलस्वरूप ही भारतीय संगीत – धर्म, दर्शन, अध्यात्म, संस्कृति, सभ्यता एवं अन्य क्षेत्रीय परंपराओं के विभिन्न सोपानों को पार करते हुए आज यहां पर पहुंचा है। इसी परंपरा में भक्ति काल एवं अष्टछाप के कवियों का भी महत्वपूर्ण योगदान है, इनमें –तुलसी, कबीर, सूर, मीरा आदि अनेक विद्वान, कवि संगीत की परंपरा का निर्वहन करते प्राप्त होते हैं।

भारतीय ज्ञान परंपरा में संगीत का एकमात्र उद्देश्य मोक्ष है। तथापि एक समय ऐसा भी आया जब भारतीय संगीत की इस महान परंपराओं में कुछ गिरावट महसूस की गई। फिर आधुनिक विद्वानों जैसे– पंडित विष्णु दिगंबर पलुस्कर, पंडित विष्णु नारायण भातखंडे, पंडित ओमकारनाथ ठाकुर, जैसे विद्वानों ने इसको और सुदृढ़ तथा पवित्र करने का कार्य किया। भारतीय संगीत की ज्ञान परंपरा अत्यंत विशाल है। इस महान परंपरा को शब्दों में प्रस्तुत करना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। फिर भी प्रस्तुत शोध–पत्र में भारत के आध्यात्मिक संगीत की परंपरा का एक सरगर्भित वर्णन किया गया है।

## निष्कर्षः

प्रस्तुत प्रपत्र के स्वरूप में हम देखते हैं कि भारतीय संस्कृति में नृत्य, संगीत और अन्य कोई भी कला केवल मनोरंजन की श्रेणी में नहीं आता था, वरन् यह एक आध्यात्मिक प्रक्रिया भी थी। भारतीय शास्त्रीय संगीत में ध्वनियों, रागों व धुनों आदि को ऐसे रचा गया है कि अगर आप उनमें पूरी तरह से तल्लीन होना सीख लें, तो ध्यानावस्था को पा सकते हैं। नृत्य कोई ऐसा साधन नहीं था, जिसे केवल मनोरंजन के लिए प्रयोग में लाया जा रहा हो। उचित मुद्राओं और भाव–भंगिमाओं के साथ इससे भी आप ध्यानावस्था पा सकते हैं। यदि शास्त्रीय संगीत में गहराई से जुड़े किसी व्यक्ति को देखें तो वह किसी संत सा दिखेगा। संगीत कोई साधारण ध्वनियाँ मात्र नहीं थीं, जिनका किसी ने आविष्कार किया हो। मनोरंजन संगीत की प्रवृत्ति नहीं थी वरन् मनुष्य को चेतना के उच्चतम स्तर तक ले जाने का साधन मात्र संगीत ही था।

## संदर्भ :


1. शर्मा, भगवत शरण, भारतीय संगीत का इतिहास, संगीत कार्यालय हाथरस, पृष्ठ 10
2. वही, पृष्ठ 11
3. यमन, डा. अशोक कुमार, संगीत रत्नावली, अभिषेक प्रकाशन, चंडीगढ़, पृष्ठ 7
4. वही, पृष्ठ 220, 235, 259
5. जोशी, मंजरी, भारतीय संगीत की परंपरा, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
6. शर्मा, डा. संजीव कुमार, भारतीय संगीत परंपरा, कल्पना प्रकाशन, दिल्ली
7. लोकमान्य बाल गंगाधार नीलक, गीता रहस्य, तिलक बंधु प्रकाशन, पृष्ठ 1, पृष्ठ 2